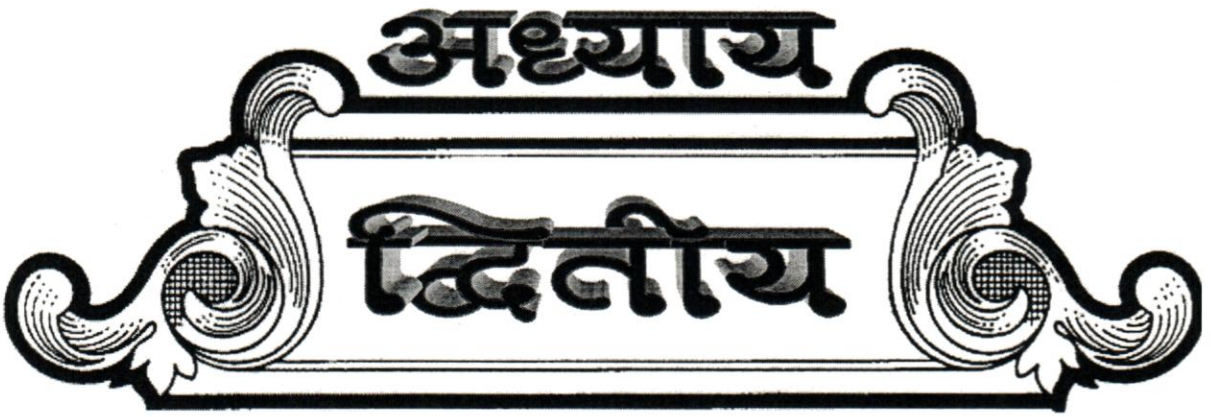

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 परिचय :-

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण भाग हैं। प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधान में चाहे वह भौतिक विज्ञान का क्षेत्र हो या सामाजिक विज्ञान का क्षेत्र हो, साहित्य का पुनरावलोकन एक अनिवार्य चरण हैं। क्षेत्रीय अध्ययन में जहाँ उपलब्ध उपकरणों का उपयोग तथा प्रदत्तों के संकलन का कार्य होता है वही सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण में महत्वपूर्ण कारक कै।

सम्बन्धित साहित्य के पुनरावलोकन से तात्पर्य उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञानकोषों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबन्धों एवं अभिलेखों आदि के अवलोकन से है जिसके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

2.2 संबंधित साहित्य :-

प्रस्तुत अध्ययन में 'सम्बन्धित साहित्य के पुनरावलोकन' के रूप में सन् 1988 से 2003 के बीच कुल छः शोधों का अवलोकन किया गया है। जिनका विवरण निम्नानुसार है :-

अग्रवाल एस (1988); ने प्राथमिक स्तर पर उच्च प्रभावी (More effective) तथा निम्न प्रभावी (Less effective) महिला अध्यापक के सामंजस्य संबंधी समस्या का अध्ययन किया। जिसके लिये 400 महिला अध्यापकों को

अध्ययन के लिये सोउद्देश्य तकनीक से चयनित किया गया। जिन पर टीचर एटीटूड इनवेन्टरी (सिंह द्वारा अनुवादित) सिन्हा तथा सिंह का एडजेन्समेन्ट इनवेन्टरी का उपयोग किया गया। इस अध्ययन से निष्कर्ष निकला कि निम्न प्रभावी तथा उच्च प्रभावी महिला अध्यापकों के सामंजस्य समस्याओं में सार्थक अन्तर है। तथा यह भी निष्कर्ष निकला कि उच्च प्रभावी अध्यापिका के सामंजस्य समस्याओं में प्रभावी सामाजिक कारक होता है जबकि निम्न प्रभावी अध्यापिका के सामंजस्य समस्याओं को भावनात्मक तथा आवेगात्मक कारक अधिक प्रभावित करते है।

चोपड़ा, आर. के. (1988) ने ''स्वतंत्र भारत में अध्यापकों की स्थिति'' का अध्ययन किया। जिसका उद्देश्य प्राथमिक, प्रारम्भिक, माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की शैक्षणिक, आर्थिक, व्यवसायिक तथा सामाजिक स्थिति का अध्ययन करना था। शिक्षा के संस्थात्मक तथा गुणात्मक स्थिति का आकलन करना तथा भविष्य में शिक्षक के लिये विकासात्मक कार्यक्रमों का सुझाव देना भी अध्ययन का उद्देश्य थाा। इसके लिये देश के विभिन्न हिस्सों के पूर्व प्राथमिक, प्रारम्भिक, माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को लिया गया। व्यवसायिक योग्यता तथा भर्ती (चयन) प्रक्रिया पर विशेष ध्यान दिया गया। अध्ययन के लिये एक प्रश्नावली तैयार की गई जो तीन भागों में विभाजित की। जिसका पहला भाग शिक्षक के व्यावसायिक शिक्षा से सम्बन्धित, दूसरा भाग आर्थिक स्थिति तथा तीसरा भाग व्यावसायिक स्थिति से सम्बन्धित था। शिक्षक के विभिन्न स्थितियों का अध्ययन करने के लिये प्रतिशत, औसत तथा माध्यिका मानों का उपयोग किया गया। अध्ययन के मुख्य परिणाम निम्नलिखित प्राप्त हुये -

(i) देश में शिक्षक शिक्षण संस्थाओं का स्तर अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग है।

(ii) भर्ती प्रक्रिया एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में जाने पर परिवर्तित हो जाती है जबकि सेवा शर्ते तथा नियम सभी प्रदेशों में लगभग एक ही जैसे है।

(iii) कार्य करने की सुविधाओं में, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में वृद्धि करने की आवश्यकता है।

(iv) वेतनमान भिन्न-भिन्न प्रदेश में भिन्न-भिन्न है।

(v) शिक्षकों का मनोबल बढ़ाने के लिये विभिन्न तरह के पुरस्कार दिये जाने चाहिये।

गोयल जे.सी. और **चोपड़ा, आर. के. (1990)** ने पिछडे तथा अगड़े प्रदेशों में स्थिति ग्रामीण तथा शहरी प्रारम्भिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के तुलनात्मक अध्ययन की प्रोफाइल बनाई। इस अध्ययन का उद्देश्य

(i) शैक्षिक रूप से पिछड़े ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के प्रारम्भिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों का लिंग के पृष्ठभूमि का तुलनात्मक अध्ययन तथा प्रोफाइल तैयार करना था। इस अध्ययन के लिये 450 प्रारम्भिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को लिया गया था। उपकरण के रूप में स्कूल इनफारमेशन कार्ड, दी टीचर इनफारमेशन कार्ड, आर्थिक, सामाजिक स्थिति स्केल, टीचर एटीट्यूड इन्वेन्टरी को उपयोग में लाया गया। प्रदत्तों का विश्लेषण प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन तथा टी टेस्ट लगा कर किया गया। अध्ययन के प्रमुख परिणाम निम्नानुसार है-

(i) शिक्षक कार्य, कार्य संतुष्टि, आर्थिक सामाजिक स्थिति, तथा व्यक्तित्व गुण में ग्रामीण तथा शहरी शिक्षक समान हैं।

(ii) प्रोफाइल में अनेक असमानताएं पाई गई।

(iii) पिछडे अगड़े दोनों प्रकार के पृष्ठ- भूमिवाले शिक्षकों में शिक्षण कार्य के प्रति अभिवृत्ति तथा आर्थिक-सामाजिक स्थिति समान है।

(iv) शहरी क्षेत्र के शिक्षक, ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक की तुलना में अधिक कक्षाएं पढ़ाते है तथा विषय के बारें में पकड़ अधिक है।

लाल संग्लीयनी (1991) ने हाईस्कूल के अध्यापकों की आर्थिक, सामाजिक तथा प्रशासनिक समस्याओं का अध्ययन किया। इस अध्ययन के उन्होंने तीन उद्देश्य रखें (i) हाई स्कूल के अध्यापकों द्वारा अनुभव की जाने वाली आर्थिक-सामाजिक तथा प्रशासनिक समस्याओं का पता लगाना (ii) समस्याओं के लिये उत्तरदायी कारकों का पता लगाना तथा (iii) आर्थिक-सामाजिक तथा प्रशासनिक समस्याओं को कम करने हेतु उपाय सुझाना।

इसके लिये उन्होंने केम्पाई संभाग, मेजोरम के 25 हाईस्कूल का चयन किया गया। उपकरण के रूप में साक्षात्कार तथा प्रश्नावली का उपयोग किया गया तथा प्रतिशत की सहायता से संभावित प्रदत्तों का विश्लेषण किया गया।

अध्ययन के प्रमुख परिणाम के रूप में -

(i) प्राइवेट तथा एडहॉक हाईस्कूल में कार्यरत शिक्षकों के लिये कार्य शर्ते वेतनमान तथा सेवा के अन्त में मिलने वाली सुविधाएं, शासकीय अध्यापकों को दी जा रही सुविधाओं से भिन्न है।

(ii) प्राइवेट स्कूल अध्यापक अपने आपको अधिक असुरक्षित महसूस करते हैं।

(iii) अध्यापकों के लिये उपलब्ध ट्रेनिंग प्रोग्राम अनेक दोषों से युक्त है।

(iv) स्कूल के हेडमास्टर तमाम सुविधाओं के बावजूदर फाइनेंस तथा अध्यापकों की कमी जैसी समस्याएं महसूस करते ।

मट्टू, बी. के. और **चन्द्र शेखर (1992)** ने एकल तथा द्वि अध्यापक वाले प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों द्वारा अनुभवन की गयी समस्याओं को पहचानने के लिये अध्ययन किया। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य विद्यालय की आधारभूत सुविधाओं, ओ.बी. का उपयोग, मल्टी ग्रेड टीचिंग, पालक तथा समुदाय से संबंध, व्यक्तिगत तथा प्रशासनिक कार्यो से संबंधित समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करता था।

अध्ययन के तीन राज्य मध्यप्रदेश, बिहार तथा राजस्थान के विभिन्न जिलों से 642 अध्यापकों का चयन किया गया। जो किसी न किसी एकल या द्वि अध्यापक स्कूल सें कार्यरत थें। प्रदत्तों के संग्रहण के लिये हिन्दी भाषा में वृहद प्रश्नावली तैयार की गयी । विश्लेषण हेतु प्रतिशत का उपयोग किया। मुख्य परिणामों के रूप में

(i) अधिकतर प्राथमिक विद्यालयों में आधारभूत सुविधाएँ उपलब्ध नहीं थी।

(ii) 80% अध्यापकों ने इस बात की आवश्यकता महसूस की, कि ओ. बी.के कक्षा में उपयोग करने के लिये ट्रेनिंग करवाई जायें।

(iii) मल्टीग्रेड टीचिंग से अधिकतर अध्यापक ने असमर्थत व्यक्त की।

(iv) 86% अध्यापकों ने मल्टी ग्रेड टीचिंग के लिये प्रशिक्षण कराने की आवश्यकता महसूस की।

(vi) अध्यापकों द्वारा महसूस की गई समस्याओं में प्रशासनिक, व्यक्तिगत तथा नये जगह पर स्थानान्तरण के उपरान्त उत्पन्न समस्याओं को बलपूर्वक इंगित किया।

खातून, ताहिरा और **हसन, जेड़ (2000)** ने माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के पद संतुष्टि का, उनके व्यक्तिगत चरों (लिंग अनुभव, व्यवसायिक प्रशिक्षण, वेतन और धर्म) के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया। अध्ययन के दो उद्देश्य थे, पहला माध्यमिक शाला अध्यापकों में पद के सापेक्ष पद संतुष्टि की जाँच करना तथा दूसरा उद्देश्य पद संतुष्ट में व्यक्तिगत कारकों में सम्बन्ध स्थापित करना था।

अध्ययन के लिये 228 माध्यमिक शाला शिक्षकों का चुनाव किया गया। जिसमें 169 पुरूष शिक्षक तथा 59 महिला शिक्षक थी। प्रदत्तों के संकलन के लिये वर्मा (1972) के जॉव सेटिस्फेक्शन स्केल का उपयोग किया गया। तथा प्रदत्तों का विश्लेषण करने के लिये 'टी' टेस्ट का उपयोग किया गया। अध्ययन के मुख्य परिणाम निम्नलिखित थे।

(i) अधिकतर अध्यापक अपने पद से संतुष्ट थे।
(ii) महिला शिक्षक, पुरूष शिक्षक की अपेक्षा अपने पद से अधिक संतुष्ट थी।
(iii) नये शिक्षकों को अनुभवी शिक्षकों से कम वेतन मिलता था।
(iv) शिक्षकों का प्रशिक्षण कार्यक्रम पद संतुष्टि पर विपरीत प्रमाण देखा गया।
(v) धर्म का पद संतुष्टि से कोई सम्बन्ध नहीं पाया गया।

शशि चिचौडा (2002) ने प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की समस्याओं का अध्ययन किया। इस अध्ययन के लिये 60 अध्यापकों का चयन किया गया। विधि के रूप में सर्वेक्षण विधि को उपयोग में लाया गया। प्रदत्तों के संकलन के लिये स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया।

निष्कर्ष :-

समग्र न्यादर्श शिक्षकों की क्षेत्रवार समस्याओं के प्रतिशतवार विश्लेषण-

(अ) समग्र न्यादर्श शिक्षकों की अकादमिक समस्याओं के प्रतिशवार विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए-

- विद्यालयों के स्तरानुकूल विषय-वस्तु की अधिकता है।
- विषय के अतिरिक्त अध्यापन कार्य करना होता है।
- पाठ्य सहगामी क्रियाओं पर कम बल दिया जाता है।
- अन्य पाठ्य सहगामी कार्य सौंपने पर शिक्षण कार्य में छूट नहीं मिलती है।
- प्रधानाध्यापक द्वारा किए हस्तक्षेप एवं कार्याधिक्य से शिक्षण कार्य अवरूद्ध होता है।
- प्रशिक्षण प्राप्त कौशल का लाभ नहीं मिलता है एवं प्रत्येक कालांश में पढ़ाने से नीरसता अनुभव होती है।

(ब) समग्र न्यादर्श शिक्षकों की प्रशासनिक समस्याओं के प्रतिशतवार विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए-

- प्रशासनिक निर्णयों में शिक्षकों की भागीदारी नहीं होती है।
- छोटे-छोटे कार्यो के लिए प्रशासन की अनुमति प्राप्त करनी होती है।
- स्टाफ मीटिंग में निर्णय की अपेक्षा आदेश पालन पर बल दिया जाता है।
- व्यावसायिक प्रगति हेतु सेमिनार, कार्यगोष्ठियों में भाग लेने के अवसर प्रदान नहीं किए जाते हैं।
- प्रशासनिक नीतियों में होने वाले बार-बार परिवर्तनों से शिक्षा में बाधा उत्पन्न होती है।

(स) समग्र न्यादर्श शिक्षकों की वित्तीय समस्याओं के प्रतिशतवार विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए-

- शिक्षकों को समय पर वेतन नहीं मिलता है।
- शोध कार्य के लिए विद्यालय से वित्तीय सहयोग नहीं मिलता है।
- राजकोषीय राशि से विद्यालय की आवश्यकता की पूर्ति नहीं होती है।
- मकान बनाने, वाहन खरीदने के लिए ऋण सुविधा आसानी से नहीं मिलती है।

(द) समग्र न्यादर्श शिक्षकों की भौतिक समस्याओं के प्रतिशतवार विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए। पीने की लिए स्वच्छ पानी का अभाव है।

- शिक्षकों की संख्या छात्र संख्या के अनुपात में उचित नहीं है।
- प्रायोगिक कुशलताओं के विकास के लिए पर्याप्त साधन सामग्री का अभाव है।
- प्राथमिक चिकित्सा सुविधा का अभाव है।
- विद्यालय के कक्षा कक्षों का क्षेत्रफल छात्र संख्या के अनुभव नहीं है।
- शिक्षकों के लिए पृथक बैठक व्यवस्था नहीं है।
- विज्ञान तथा गणित विषयों में शिक्षण के लिए सहायक सामग्री का अभाव।